

## ब्रजागमन

भगवान् सर्वत्र हैं; परन्तु सबमें कैसे हैं, क्या हैं, सबके साथ उनका क्या सम्बन्ध है यह बात जीव को सुगमता से नहीं जान पड़ती । इसी से परम कृपालु सर्वेश्वर ने अपने गुप्त धाम को जीवों के कल्याण के लिये प्रगट कर दिया है । धाम उसे कहते हैं जिसकी रज से, पत्थर से, पेड़ से, पानी से, रोशनी से, गरमी से, ठण्ड से, हवा से, आसमान से, पशु से, मनुष्य से अर्थात् सब वस्तुओं से, अपने प्यारे प्रभुका सीधा सम्बन्ध दीख पड़े । मुरली-मनोहर पीताम्बरधारी साँवरे सलौने ब्रजराजकुमार का सीधा सम्बन्ध ब्रजभूमि की प्रत्येक वस्तु के साथ है । इससे यह उनकी नित्यलीलाभूमि है । यहाँकी रजमें वे लोटे हैं । यहाँ के पत्थरपर वे बैठे हैं । यहाँके वृक्षोंपर वे चढ़े हैं । होलीके दिनोंमें यहाँके गधेपर भी सवार हुए हैं । यहाँके पक्षियों के साथ वे चहके हैं । यहाँकी गायों के बछड़े बने हैं और ग्वालिनियोंके बच्चे । सबके शिरोमणि तो सदा से ही हैं । यहाँ चोर-जारशिखामणि का पद भी स्वीकार करके अपने को गोरवान्वित अनुभव करते हैं । यहाँकी झाड़ियों में, झुरमुटों में, घूमते हुए प्रेमीलोग अब भी गाते रहते हैं ।

यहीं कहूँ श्याम काहूँ कुंज रमत है हैं,  
भुजभरि भेंटिबे कौ हिय उमहत है ।

ब्रजभूमि का जितना सम्बन्ध श्रीकृष्ण से है उतना ही बल्कि एक अर्थ में उससे भी अधिक सम्बन्ध उनके प्रेमियों से है । वास्तव में ब्रजभूमि प्रेमभूमि है और इसके धनीधोरी प्रेमी हैं । यहाँ प्रेमी दाता है और श्रीकृष्ण ग्रहीता । और सर्वत्र श्रीकृष्ण दाता हैं तथा भक्तजन ग्रहीता । इसी से जो प्रेम के सच्चे इच्छुक हैं उनके मन में इस धाम के दर्शन की इच्छा होती है और वे यहाँ आकर प्रेमरत्न की पिटारी प्राप्त करते हैं ।

सन्त कोकिलजी के मन में ब्रजभूमि के दर्शन की उत्कट इच्छा रहा करती थी । जब वे द्वारिका में थे तब भी विदर्भ-राजकुमारी श्रीकृष्णपट्टमहिषी श्रीरुक्मिणी से और कुछ नहीं चाहते थे, केवल शुद्ध प्रीति ही चाहते, मानों अब उसकी पूर्णता का समय आ गया । जो बात मन में रहती है सो एक न एक दिन प्रगट होकर रहती है । श्रीस्वामीजी कुछ भक्तों के साथ श्रीवृन्दावनधाम आ गये ।

अच्छा, तो यह वृन्दावन है । इसके प्रत्येक कण आनन्द और प्रेम के मूर्तरूप हैं । जैसे वृषभानुनन्दिनी श्यामसुन्दर को प्रेम से परिवेष्टित रखती हैं वैसे ही भानुनन्दिनीजी वृन्दावन को तीन ओर से । ब्रह्मा, उद्धव आदि बड़े-बड़े प्रेमी और देवता वृक्षों एवं लताओं के रूप में यहाँ निवास करते हैं और अपने नीचे की ओर विहार करते हुए युगलकिशोर को भर आँख देखते हैं । अपनी छाया, पत्र, पुष्प, फल, अकुर, सुगन्धि, निर्यास आदि से उनकी सेवा करते हैं । उन्हीं की भुजाओं के आश्रित होकर रंग-

बिरंगे पक्षी कलरव करते रहते हैं । भाव से देखने पर इस वृन्दावन की प्रत्येक वस्तु में एक मधुर नृत्य, प्रेम पूर्ण संगीत और अद्भुत आकर्षण मिलता है ।